१ ओअंकार (ੴ) सतिगुर प्रसादि ॥

सिंह सरदारों की मुग़ल सम्राट शाहआलम द्वितीय से दिल्ली विजय कर के त्यागने

की अद्‌भुत वीर गाथा

विशाल युद्ध का नायक करोड़ सिंघिया मिस्ल का जत्थेदार सरदार बघेल सिंघ

सन् 11 मार्च 1783 ई.

तानाशाही से लोकतंन्त्र स्थापित करने का सिक्ख सरदारों का संघर्ष

मुख्य लक्ष्य

वर्तमान समय में त्याग और बलिदान की अद्‌भुत वीर गाथा उन देश भक्तों के समक्ष रखने का दृढ़ संकल्प लिया है जो इस भ्रष्टाचारी समाज में कुर्सी छीना-झपटी के अवैध काण्डों का दृश्य देखते-देखते दुखी हृदय से भगवान के चरणों में प्रार्थना करते रहते हैं कि हे प्रभु इन राजनितिज्ञ को सुमति प्रदान करें।

प्रकाशक :

क्रांतिकारी जगत गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

Website : www.gurunanakfoundation.info
E-mail : gurunanakfoundation2019@gmail.com

लेखक: जसबीर सिंघ
Mob.: 9988160484
6239045985

Type Setting by:
Radheshyam Choudhary
Mob.: 9814966882

Download Free

जत्थेदार सरदार बघेल सिंघ (करोड़ सिंहिया मिसल)

मिसल = रियासत

करोड़ सिंहिया मिसल के पूर्वज सरदार शाम सिंघ जी गाँव नारली के निवासी थे। सन् 1739 ईस्वी में आप जी नादर शाह की सेना से जूझते हुए वीरगति को प्राप्त हो गये। तद्पश्चात् उनका सहयोगी सरदार कर्म सिंह इस जत्थे के मुखिया बने परन्तु वह भी सन् 1746 ईस्वी के एक युद्ध में शहीद हो गये । तब इस जत्थे का नेतृत्त्व सरदार करोड़ा सिंह जी ने सम्भाला । आप गाँव फैजगढ़ जिला गुरदासपुर के निवासी थे।

जब सन् 1748 ईस्वी में मिसलों का गठन किया गया तब आपके जत्थे को एक मिसल की मान्यता प्राप्त हुई । इस मिसल का नाम मिसल फैजगढ़िया पड़ गया परन्तु इस मिसल को आपकी वीरता के कारण आपके नाम से प्रसिद्धि प्राप्त हुई ।

सरदार करोड़ सिंघ जी बहुत साहसी यौद्धा थे, उन्होंने उड़मुड़ टांडा के युद्ध में जालन्धर के विश्वम्बर दास दीवान (मुख्य मंत्री) को मार गिराया था। सिक्ख संघर्ष में सरदार करोड़ सिंघ जी ने बहुत सी आर्थिक सहायता भी की । वह उस क्षेत्र के धनाढ्य व्यक्तियों में से एक थे । इस मिसल का प्रभाव तथा अधिकार क्षेत्र बंगा, नवां शहर और बुरवा इत्यादि क्षेत्र थे । इस मिसल का मुख्य लक्ष्य सरहिन्द के नवाब को सदैव के लिए समाप्त करना था, जिसमें वे पूर्ण रूप से सफल हुए । अहमदशाह अब्दाली को उसके चौथे आक्रमण में दिल्ली से लौटते समय सर्वप्रथम इसी जत्थे ने बुरी तरह लूटा और उससे बन्दी बनाई गई। अनेकों अबलाओं को छुड़वाने में सफल हुए । जब अब्दाली सन् 1765 ईस्वी में सिक्खों से परास्त होकर वापिस लौट गया और उसके पास जब सिक्खों से सीधी टक्कर की क्षमता न रही तब इस मिसल ने अपने प्रभाव क्षेत्र का विकास करके सतलुज नदी पार भी कर ली । इस मिसल के दो प्रमुख वीर यौद्धा थे जिनके

नाम क्रमशः जत्थेदार मस्तान सिंह तथा जत्थेदार कर्म सिंह थे । इन दोनों के वीरगति प्राप्त करने पर सन् 1761 ईस्वी को जत्थेदारी सरदार बघेल सिंह जी को प्राप्त हुई । यह युवक बहुत साहसी तथा बहुमुखी प्रतिभा का स्वामी था । आप जी का निवास स्थान गाँव झबाल जिला अमृतसर था । जिन दिनों आप करोड़ सिंहिया मिसल के संचालक बने उन दिनों भारत की राजनीतिक परिस्थितियां इस प्रकार थीं –

मुगलों का अधिकार क्षेत्र इलाहाबाद के प्रान्त तक ही सीमित था । पूर्व की तरफ अवध के नवाब का राज्य था । दक्षिण की ओर भरतपुर के जाटों का ही अधिकार था । पश्चिम की तरफ राजपूतों का हाथ ऊपर था, शाह आलम द्वितीय स्वयं इलाहाबाद में था । दिल्ली नजीबुदौला के अधिकार में थी । दिल्ली नगर की पुरानी शानोशौकत काफूर हो गई थी । भूख ही नाच करती थी । जादू नाथ सरकार ने ठीक ही लिखा है – 'दिल्ली इतनी बद–किस्मत थी कि अफगानों, मरहट्टों, सिक्खों, जाटों, गूजरों तथा पिंडरियों के हाथो तबाह होती रही । उस समय किसानों की दशा बहुत दर्दनाक थी । इस तरह मरहट्टों का साम्राज्य भी टूट गया था । ग्वालियर के सिंधियों, बड़ौदा के गायकवाड़, इंदौर के होलकुर नाम मात्र ही पेशवा के अधीन थे । नागरपुर के भौसले ने आज़ादी का ऐलान कर दिया था । पेशवा उत्तरी हिन्दुस्तान में हाथ पसार रहा था । मरहट्टे चाहे शक्तिशाली दिखाई देते थे परन्तु उनकी शक्ति कम हो गई थी । जाटों ने आगरा और जयपुर के बीच हकूमत बना ली थी । उस समय जाट शक्तिशाली थे । जाट राज्यों की आर्थिक स्थिति मजबूत थी । राजपूतों का नेता माधो सिंह था । उसका अधिकार क्षेत्र जैन नगर में था । जैन नगर के समीप मारवाड़ का राजा विजय सिंह था । रूहेले दिल्ली व हिमालय के बीच अपना अधिकार जमा चुके थे । बरेली उनका केन्द्र था । नजीबुद्दौला हमीज रहमतखां तथा अहमद खान बंगरा प्रसिद्ध नेता थे । उत्तर पूर्व गँगा में सुजाहुदौला, एक सुलझा हुआ तथा

शानदार जरनैल था। अँग्रेजों ने क्लाइव के नेतृत्त्व में बँगाल, बिहार व उड़ीसा की दीवानगी ले ली थी। उत्तर सरकार पर कब्जा था व कर्नाटक का नवाब अँग्रेजों का पानी भरता था।

बड़े घल्लूघारे के समय (सन् 1762 ईस्वी) जत्थेदार करोड़ा सिंह जी को अनेकों घाव सहन करने पड़े परन्तु वह शूरवीर प्रथम पंक्ति में होकर लड़ते रहे। सन् 1769 ईस्वी में जैन खान को मौत के घाट उतार कर सिक्खों ने समस्त सरहिन्द क्षेत्र को आपस में बाँट लिया था। इस बँटवारे में हरियाणा क्षेत्र में आपके हिस्से में बहुत बड़ा भूभाग हाथ आया। तद्पश्चात् दल खालसा के सेनानायक सरदार जस्सा सिंह आहलूवालिया के नेतृत्त्व में सरदार करोड़ा सिंह जी अपनी मिसल के सिपाहियों को लेकर सन् 1764 की फरवरी मास के अन्त में बुडिया घाट से यमुना नदी पार कर गये। सर्वप्रथम सहारनपुर, फिर शामली, कंदेला, अंबली, मीरांपुर, देवबन्द, मुजफ्फर नगर, जबलापुर, कनखल, लंढोरा, नाजीबाबाद, नगीना, मुरादाबाद चन्दौसी अनूप शहर, मठ मुनीश्वर आदि नगरों के शासकों से खिराज वसूल की। इन युद्धों में दिल्ली के शासक नजीबुद्दौला की सेना से लोहा लेते समय सरदार करोड़ा सिंह जी गोली लगने से वीरगति को प्राप्त हुए। इस पर उनके स्थान पर मिसल के सरदार बघेल सिंह जी बने। सन् 1769 ईस्वी में जब नजीबुद्दौला के विरूद्ध राजा जवाहर मल की सिक्खों ने सहायता की, उस समय सरदार बघेल सिंह जी अपने सिपाहियों सहित सम्मिलित थे।

अब्दाली के आठवें आक्रमण के समय सरदार बघेल सिंह जी ने अब्दाली के शिविर को बुरी तरह लूट लिया और उसे परास्त करके उसे वहाँ से वापिस लोटने पर विवश कर दिया। दो वर्ष बाद मई, 1767 ईस्वी में सिक्खों ने पुन: यमुना पार धावा बोल दिया। उन दिनों अब्दाली ने भारत पर नौंवा आक्रमण किया हुआ था। अब्दाली ने अपने सेनानायक जहान खान को विशाल सेना सहित नजीबुद्दौला की सहायता के लिए भेजा। जहान खान ने सिक्खों पर आक्रमण कर दिया। घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध में बघेल सिंह गम्भीर रूप में घायल हो गये। इस पर वहाँ

से सिक्ख पँजाब लौट आये । इस बीच अब्दाली ने फिर से भारतीय अबला महिलाओं को पकड़ कर अपनी दासियाँ बना लिया । जब वह वापिस लौटने लगा तो दल खालसा के सरदारों ने उस पर जेहलम नदी पार करते समय आक्रमण कर दिया और समस्त अबला महिलाओं को छुड़वा लिया । इस अभियान में बघेल सिंह का भी बहुत योगदान था ।

अहमदशाह अब्दाली का भय सिक्खों के हृदय पर कभी रहा ही नहीं। अब सिंह उसे परास्त बादशाह से अधिक महत्त्व नहीं देते थे। अत: सिक्खों ने पुन: सन् 1768 ईस्वी में यमुना पार के क्षेत्रों पर आक्रमण कर दिया । इस बार नजीबुद्दौला ने सिक्खों से संधि करने का मन बना लिया । उसने मुकाबला करने के स्थान पर गँगा - यमुना के मध्य क्षेत्र को सिक्खों की रक्षा वाला क्षेत्र मान लिया और प्रत्येक फसल में सिक्खों को किसानों से निश्चित दर अनुसार लगान मिलने लगा ।

यह वह समय था जब सिक्ख एक बहुत बड़ी राजनीतिक शक्ति में उभरे थे । सिक्खों का प्रभाव क्षेत्र सिंधू नदी से लेकर यमुना नदी तक फैल चुका था परन्तु खेद की बात यह थी कि शक्ति प्राप्ति की दौड़ में अधिकांश मिसले अधिक से अधिक क्षेत्रों को अपने नियन्त्रण में लेने की होड़ में लग गई । परिणामस्वरूप कई बार आपस में भी लड़ पड़ते, जिस कारण वे अपना ध्यान शत्रु को मार गिराने में नहीं लगा सके ।

इसी संदर्भ में यह घटना बहुत सोचने समझने की थी । सन् 1769 ईस्वी में सरदार अमर सिंह पटियाले वाले ने सरदार बघेल सिंह की मिसल के कुछ गाँवों को अपने अधिकार में ले लिया । इस पर दोनों पक्षों में युद्ध ठन गया । घुड़ाम के रण में सेना आमने सामने हुई परन्तु जल्दी ही राजा अमर सिंह को भूल का अहसास हुआ । उसने अपने वकील द्वारा संधि का संदेश भेजा जो स्वीकार कर लिया गया । इस पर स्थाई मित्रता स्थापित करने के लिए राजा अमर सिंह ने अपने पुत्र साहिब सिंह को सरदार बघेल सिंह के हाथों अमृतपान करवाया ।

सन् 1773 ईस्वी में जब उत्तरप्रदेश के जलालाबाद क्षेत्र के पंडितों की प्रर्थना को स्वीकार करते हुए सरदार कर्म सिंह ने यमुना पार की तो उस समय उनके साथ सरदार बघेल सिंह जी भी थे। जलालाबाद के स्थानीय हाकिम (शासक) हसन खान ने एक नवेली दुल्हन जो कि एक ब्राह्मण स्त्री थी, का बलपूर्वक अपहरण कर लिया था । वह दुष्ट प्राय: ऐसी घिनौनी करतूत करता ही रहता था । अत: उसे इस बार सबक सिखाने के लिए असहाय अथवा दीन लोगों की सहायता हेतु सिक्ख कई मीलों की दूरी तय करके वहाँ पहुँच गये । भयंकर युद्ध हुआ परन्तु सत्य की विजय हुई । सिक्खों ने हसन खान को मृत्यु दण्ड दिया और उस ब्राह्मण स्त्री को अपनी ओर से दहेज देकर पति के घर विदा किया । इस क्षेत्र को विजय करने के उपरान्त सिक्ख दिल्ली की तरफ बढ़े । 18 जनवरी, 1774 ईस्वी को सिक्ख शाहदरे की तरफ से दिल्ली में घुस गये और वहाँ पर कुछ अमीरों को जा दबोचा। उनसे नज़राना लेकर शाही सेना से सामना होने से पूर्व तुरन्त पँजाब लौट गये ।

सन् 1775 ईस्वी में करोड़ा मिसल का स्वामी सरदार बघेल सिंह अपने अन्य साथियों के साथ बेगी घाट से यमुना पार करके 22 अप्रैल को लखनोती, गंगोह, अम्बहेटा, ननौता आदि क्षेत्रों का दमन करते हुए देवबन्द जा विराजे । वहाँ का स्थानीय प्रशासक बहुत क्रूर था और जनता पर अत्याचार करने से बाज नहीं आता था । अत: सिक्खों ने स्थानीय जनता की पुकार पर उसे परास्त कर मृत्यु दण्ड दे दिया । वहाँ की जनता की मांग पर नये प्रशासक की नियुक्ति की गई जिसने प्रति वर्ष 600 रूपये नज़राने के रूप में सिक्खों को देने स्वीकार किये ।

यहाँ से दल खालसा गौसगढ़ पहुँचे। यहाँ का वास्तविक प्रशासक नजीबुद्दौला का देहान्त 31 अक्टूबर, 1770 को हो चुका था, उसके स्थान पर उसका पुत्र जबीता खान प्रशासक था परन्तु उसने सिक्खों के उच्च कोटि के आचरण को देख सुन कर उनसे संधि कर ली और सिक्खों को पचास हजार रूपये नज़राने के रूप में दिये। वास्तव में उसने अपने पिता नजीबुद्दौला की नीति

त्याग दी और सिक्खों को अपना स्थाई मित्र बनाने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया । यहाँ से वह सिक्ख सेना के साथ मिल कर दिल्ली विजय करने चल पड़ा । 15 जुलाई, 1775 ईस्वी को सिक्ख सेना दिल्ली में प्रवेश कर गई । वहाँ जल्दी ही उनका शाही सेना से सामना हुआ, घमासान युद्ध के बाद भी कोई निर्णय नहीं हो पाया । अन्त में सिक्ख सेना वापिस मेरठ की तरफ आ गई । दिल्ली के जरनैल नज़फ खान ने सिक्खों का पीछा किया परन्तु उसको भारी क्षति उठानी पड़ी । लक्ष्य की प्राप्ति न होती देखकर जबीता खान अपने क्षेत्र गौसगढ़ लौट गया । ऐसे में सिक्ख पुनः यमुना नदी पार करके 24 जुलाई, 1775 ईस्वी को पँजाब लौट आए।

सन् 1775 ईस्वी में दिल्ली से अब्दुल अहमद ने अपने भाई अब्दुल कासिम को सहारनपुर का फौजदार नियुक्त करके जाबिता खान को दण्डित करने के लिए भेजा । इस पर जाबिता खान ने अपनी सहायता के लिए पँजाब से सिक्खों को आमन्त्रित किया । सरदार बघेल सिंह अपने अन्य सहयोगी सरदारों को साथ ले कर बुढाना नामक स्थान पर जाबिता खान को मिले । 11 मार्च, 1776 ईस्वी में अमीर नगर के रणक्षेत्र में घमासान युद्ध हुआ । जिसमें शाही जरनैल अब्दुल कासिम मारा गया । उसकी सेना भाग गई । मुगल सेना का शिविर सिक्खों के हाथ आया । तद्पश्चात् सिक्ख अलीगढ़, कासगंज इत्यादि से नज़राने लेते हुए जून, 1775 में पँजाब वापिस चल पड़े ।

इस प्रकार के नित्य प्रति युद्ध से परेशान होकर दिल्ली के बादशाह ने जाबिता खान को ओदश दिया कि वह सिक्खों के साथ मुगल सरकार की स्थाई संधि की कोई बात चलाएं । दोनों पक्षों में लम्बी बातचीत हुई, जिसका परिणाम सन् 1781 ईस्वी में यह हुआ कि बादशाह ने गंगा यमुना के मध्य के क्षेत्र के लगान में से आठवां हिस्सा सिक्खों को देना स्वीकार कर लिया परन्तु यह संधि अधिक समय तक न चल सकी । इस पर सिक्ख सरदार बघेल सिंह के नेतृत्त्व में पुनः यमुना पार कर गये।

इससे पहले सन् 1780 ईस्वी में दिल्ली में स्थित प्रधानमंत्री अब्दुल खान ने राजकुमार फरखंदाबख्त को राजा अमर सिंह पटियाले वाले के विरूद्ध विशाल सेना देकर भेजा तो उस समय सरदार बघेल सिंह शांत बने रहे । उन्होंने अपने क्षेत्र (जिला बरनाला) में से शाही सेना को गुजरने दिया परन्तु जब दोनों सेनाएं आमने सामने हुई, तब उन्होंने अपनी सेना पटियाला नरेश के पक्ष में रणक्षेत्र में भेज दी । जब राजकुमार फरखंदाबख्त ने महसूस किया कि वह चारों ओर से सिक्ख सेना से घिर गया है तब वह संधि की बातें करने लगा । इस पर बघेल सिंह ने कह दिया कि अब तो तुम्हें अन्य मिसलों के सरदारों की सेना का खर्चा वहन करना पड़ेगा, जो पटियाला नरेश की सहायता हेतु यहाँ आई हैं। विवशता में राजकुमार फरखंदाबख्त ने बहुत सा धन दिल्ली से मँगवाया और उसे मुआवजे के रूप में सिक्ख सेनापतियों को दिया और जान बचा कर लौट गया ।

सन् 1783 जनवरी में दिल्ली पर माराठों ने नियन्त्रण कर लिया और शाहआलम सानी को अपना कैदी बना लिया। तब 'लार्ड लेक' को मुग़ल प्रशासन ने अमंत्रित करके माराठों से मुक्ति दिलवाने के लिए प्रार्थना की। तब उस ने कोइल नामक स्थान से अंग्रेज़ी जनरल 'अक्टर लोनी' को माराठों से दिल्ली खाली करवाने के लिए भेजा। माराठे अंग्रेज़ी सेना के भय से तुरन्त दिल्ली खाली कर भाग खड़े हुए। इस पर अंग्रेज़ मुग़ल सत्ताधारियों को कमज़ोर पाकर दिल्ली पर अपना स्थाई कब्जा करने के विचार करने लगे यह देखकर शाहआलम द्वितीय ने तुरन्त अंग्रेज़ों से बचने के लिए सिक्ख सरदारों (मिस्लदारों) को बुला भेजा कि आप लोग मुझे अंग्रेज़ों के भय से मुक्ति दिलवाए।

जब सरदार बघेल सिंघ को यह निमन्त्रण पत्र मिला तो वे सोचने लगे कि यह बहुत ही शुभ अवसर है। दिल्ली पर स्थाई रूप में नियन्त्रण करने का परन्तु उन्होंने स्वयं को इतना शक्तिशाली न पाकर अपने मित्र अन्य मिस्लदारों को इस कार्य के लिए सहायता करने के लिए

बुला भेजा ताकि अंग्रेज़ जैसे कुटिल तथा बड़ी शक्ति से लोटा लिया जा सके।

इनमें थे मिस्लदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया, जस्सा सिंघ राम गाढ़िया, तथा मिस्ल भंगी के सरदार तारा सिंघ जी इत्यादि। ये सभी अपना-अपना सैन्य दल लेकर दिल्ली सीमा पर एकत्र हुए इस स्थान को आज 'सिंघु बार्डर' कहा जाता है। जैसे ही सिक्ख सैना की एकत्र की सूचना अंग्रेज़ जरनल 'अक्टर लोनी' को मिली वह तुरन्त अपना समस्त सैन्य बल लेकर वापस लोट गया क्योंकि वह सिक्खों की विशाल सेना से भिड़ना नहीं चाहता था। उस समय जत्थेदार बघेल सिंघ के नेतृत्व में तीस हजार (30,000) घुड़ सवार तथा दस हजार (10,000) पैदल सेना थी। वास्तव में वह वीर योद्धा कई बार दिल्ली के उस पार के क्षेत्रों यमुना-गंगा नदी के मध्य भू:भाग से नज़राने लेते रहे थे। अत: उनकी धाक से उन दिनों मराठे, अंग्रेज़ तथा मुग़ल सभी कापते थे।

जैसे ही सिक्ख सरदारों के आगमन की सूचना से अंग्रेज़ वापस लौटे वैसे ही मुग़ल सम्राट शाहआलम ने दिल्ली के सभी दरवाजे बन्द कर लिए और सिक्ख सेना को संदेश भेजा कि अब आपकी आवश्यकता नहीं है। इस पर मिस्लों के जत्थेदार बघेल सिंघ ने सम्राट से अपने सैन्य बल के दिल्ली पधारने का खर्चा मांगा परन्तु शाहआलम ने मुआवजा पूर्ति से साफ इन्कार कर दिया। यह बात सभी मिस्लदारों को अपना अपमान महसूस करवा रही थी। अत: उन्होंने समस्त दिल्ली को चारों तरफ से घेर लिया। इस पर दोनों तरफ से भयंकर युद्ध की तैयारियां होने लगी।

मुग़ल सेना ने अजमेरी दरवाजे के ऊपर तोपे तैनात कर दी और चारों तरफ सशस्त्र सैनिक दिल्ली की सुरक्षा हेतु पहरे पर बिठा दिये। ऐसे में सरदार बघेल सिंघ के नेतृत्व वाली सिक्ख सेना असमंजस में पड़ गई कि यदि वापस लोटते हैं तो बहुत हीन स्थिति से गुजरना होगा। यदि दिल्ली पर आक्रमण करते है तो हमारी सामरिक दृष्टि से स्थिति ठीक नहीं क्योंकि हम तोपों की मार में है जो बहुत ऊँचे स्थानों पर तैनात हैं। इस पर सभी सरदारों ने मिलकर गुरमत्ता (विचार विमर्श)

किया और अंत में अपने स्वभिमान के लिए प्रभु चरणों में अरदासा (प्रार्थना) करके युद्ध की घोषणा करके जयघोष करते हुए जयकारे लगाने शुरु कर दिया। **बोले से निहाल, सत श्री अकाल।।** बस फिर क्या था। चारों तरफ बारूद का धूआ और आग ही आग बरसने लगी। इस बारूदी लड़ाई में पहले-पहल सिक्ख सेना को भारी क्षति उठानी पड़ी परन्तु वे तुरन्त सम्भले उन्होंने भी एक तोप का गोला दागा जिस से अजमेरी दरवाजे में मोरी हो गई। बस फिर क्या था बहुत से सिक्ख सैनिक भारी ख़तरा उठाते हुए उस मोरी से दिल्ली में प्रवेश कर गये और अजमेरी दरवाजे को अन्दर से खोल दिया। तुरन्त सिक्ख सेना की भयंकर मुग़ल सेना से मुट्ठ भेड़ हुई थोड़ी सी घमासान लड़ाई के पश्चात मुग़ल सेना भाग खड़ी हुई और शस्त्र-अस्त्र फेंक कर खालसा सेना के समक्ष आत्म समर्पण कर दिया। जब खालसा सेना ने लाल किले में प्रवेश किया तो सम्राट शाहआलम किले के किसी गुप्त तैखाने में जा छिपा और वहीं से किसी गुप्त सुंरग मार्ग से किले के बाहर निकल गया। खालसा सेना ने दिल्ली विजय की खुशी में कई दिनों तक मिठाईयां बांटी उस स्थान को आज भी मिठाई वाला बाजार कहा जाता है।

शाहआलम ने किसी सुरक्षित स्थान पर पनाह ली और वहीं पर अपने वफादार दरबारियों को बुला लिया। अब वह चाहता था कि किसी भी प्रकार से सिक्ख जत्थेदारों से समझौता हो जाए और वे मुझे पुनः दिल्ली का शासक मान ले, परन्तु अब ऐसा सम्भव नहीं हो सकता था क्यों कि समय हाथ से निकल चुका था। सभी दरबारियों ने एक मत होकर कहा- हम सैन्य बल से तो सिक्खों से दिल्ली कदाचित खाली नहीं करवा सकते, हां लेकिन कोई युक्ति हो जिस से खालसा पंथ मान जाए..............!!! ऐसे में मुंशी राम दयाल ने कहा हां ऐसा हो सकता यदि समरू बेग़म जोकि सरदार बघेल सिंघ की मुँह बोली बहन है। वह आप के हक की वकालत करें। तब क्या था। बेगम समरू को बुलाया गया और उसे शाह आलम ने अपना वकील नियुक्त करके खालसा पंथ के दरबार में भेजा।

बेगम समरू

दिल्ली के मुग़ल शाही परिवार की तरफ से निश्चित किये हुए नवाबों में से एक सरधना नामक जागीर का फ्रांसीसी नस्ल का नवाब समरू था। इसने एक शाही परिवार की महिला से विवाह किया हुआ था। इस महिला को स्थानीय लोग बेगम समरू नाम से पुकारते थे। यह महिला शाही परिवार से होने के कारण शिक्षित ज्ञानवान तथा बुद्धिजीवी थी। एक बार यह समरू बेगम अपने मायके से ससुराल डोली में बैठकर जा रही थी कि रास्ते में यमुना नदी के तट पर सिक्ख सैनिकों ने देख लिया कि किसी औरत को शाही वर्दी के कहार उठाए ले जा रहे है। ये सिक्ख सैनिक जत्थेदार बघेल सिंघ के सिपाही थे जो उस समय दिल्ली विजय की मंशा से वहां पर तैनात थे। उन्होंने सोचा कि शायद इस डोली में कोई अबला नारी हो, जिसे ये शाही कहार बल पूर्वक यौन शौषण के विचार से ले जा रहे हैं। तब क्या था सिक्ख सैनिकों ने अपने घोड़े दौड़ा कर कहारों का पीछा किया। तब शाही कहारों ने मौत को सामने देखकर डर के मारे भागने में ही भलाई समझी उन्होंने डोली को वहीं नीचे उतारा और भाग खड़े हुए। इस पर उस महिला ने आश्चर्य में बाहर झांककर देखा तो वहां सिक्ख सैनिकों को पाया। वह भयभीत हुई परन्तु सिक्ख सैनिकों ने उसे बहुत सत्कार से पूछा कि आप कौन हैं तथा ये शाही कहार आप को कहां ले जा रहे हैं? उस महिला ने बहुत धैर्य से उत्तर दिया कि मैं अपने ससुराल वापस जा रही हूँ ये मेरे कहार हैं। जैसे सिक्ख सैनिकों का भ्रम हटा उन्होनें उन कहारों को वापस बुलाया और बहुत अदब से उस महिला को अपनी मंजिल पर जाने दिया। इस बीच उस महिला (समरू बेगम) ने सिक्ख सैनिकों से बहुत प्यार से पूछा आप कौन है? सैनिकों ने उत्तर दिया हम जत्थेदार सरदार बगेल सिंघ के सिपाही हैं तो वह बहुत आश्चर्य चकित हुई कहने लगी मैंने बघेल सिंघ के विषय में सुन रखा है कि वह बहुत क्रूर है परन्तु तुम लोग तो वैसे दिखाई नहीं

देते? उत्तर में सैनिकों ने कहा–सरदार बघेल सिंघ बहुत वीर योद्धा होने के साथ–साथ ऊँचे आदर्श चरित्र का स्वामी है। कोतुहल वश समरू बेगम ने कहा कि मैं उनसे भेंट करना चाहती हूँ। सैनिकों ने उसे बताया कि आप कभी भी उन से मिल सकती हैं। समरू बेगम राजनीति जानती थी अत: उसने सरदार बघेल सिंघ से मिलने का कार्यक्रम बनाया और वह उनसे मिली। जैसे ही इन दोनों की भेट (मुलाकात) हुई चतुर समरू बेगम ने बघेल सिंघ को अपना बड़ा भाई बना लिया। बहुत स्नेह पूर्ण वातावरण में इन दोनों में विचार–विमर्श हुआ इस पर बघेल सिंघ ने उसे बहुत उपहार देकर विदा किया।

दिल्ली विजय

जैसे ही मुग़ल सेना ने आत्म समर्पण किया। खालसा दल दिल्ली के लाल किले में प्रवेश कर गया और उन को आपार धन हाथ लगा परन्तु उनके समक्ष समस्या यह थी कि हम मिस्लदारों में से दिल्ली का शासक कौन बने? इस कार्य के लिए जत्थेदार बघेल सिंघ ने कहा–हम सभी में योग्य और कुशल प्रशासक है जत्थेदार सरदार जस्सा सिंघ आहलुवालियां जी। अत: उन्हें ही सुलतान–ए–उलकौम की उपाधि से अलंकृत कर के दिल्ली के तख्त पर विराजमान करते हैं। पहले–पहल यह विचार सर्व सम्मिता से स्वीकार कर लिया गया परन्तु तभी जत्थेदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया जी ने कहा–कहीं हम भूलकर रहे हैं क्योंकि हमारा सविधान श्री गुरू ग्रंथ साहिब की वाणी है उसके अनुसार कोई व्यक्ति विशेष शासक नहीं हो सकता, वहां तो पंचायती राज्य प्रणाली की शिक्षा दी गई है। उनकी बात में तथ्य था। इस पर सभी ने अपने पहले निर्णय पर पुन: विचार किया तो पाय ऐसा सम्भव है। तभी उन्होंने पांच प्यारों का चयन (Selection) किया और उन्हें औपचारिकता सम्पूर्ण करने के लिए तख्त पर सुशोभित किया। ये थे जस्सा सिंघ आहलुवालिया जी, जस्सा सिंघ राम गढ़िया जी, बघेल सिंघ, तारा सिंघ

गैबा तथा राम सिंघ भंगी जी। इस औपचारिकता समागम पर सभी ने जय घोष के लिए जयकारे लगाये और कार्य सम्पूर्ण किया। परन्तु प्रकृति को कुछ और ही मंजूर था। जैसे ही विधिवत राज्य तिलक सम्पूर्ण हुआ कि तभी सरदार बघेल सिंघ की मुंह बोली बहन समरू बेगम शाहआलम की वकील बन कर हाज़िर हुई और उसने क्षमा याचना की गुहार लगाई। सरदार बघेल सिंघ ने उस का भव्य स्वागत किया और कहा– **"बोलो मेरी बहन क्या चाहती हो?"** इस पर समरू बेगम ने सरदार जी के आगे झोली फैला दी और कहा मैं शाहआलम के जीवन की भीख मांगती हूँ और उस का कब्जा दिल्ली के किले पर बना रहे। सिंघों का दरबार सजा हुआ था यह महिला पहली थी जो फरियाद लेकर खालसा दरबार में हाज़र हुई थी। इस लिए समरू बेगम की गुहार पर ध्यान केन्द्रित किया गया। खालसा दरबार से कोई निराश नहीं जाता यह उसे वचन दिन गाया। इस पर समरू बेगम ने कहा–

सरदार बघेल सिंघ की परीक्षा की घड़ी थी वह दुविधा में फस गये। इस पर उन्होंने कहा–मैं सभी अन्य सरदारों से बात करके कुछ समाधान निकालता हूँ। जत्थेदार जस्सा सिंघ आहलुवालियां जी ने कहा–हम तो दिल्ली पर कब्जा करना नहीं चाहते थे परन्तु शाहआलम की नियत खराब है उसने हमारी उचित मांग, हमारे दिल्ली आने का मुआवज़ा नहीं दिया और हमारे सैनिकों को शहीद किया है, उत्तर में बेगम ने कहा–वह अपनी करतूत पर शर्मिंदा हैं उन्हें क्षमा दान दिया जानी चाहिए। उनका कहना है कि वह खालसा पंथ की आज्ञा का पालन करेंगे तथा उचित शर्तो को भी मान लेंगे।

तब खालसा पंचायत ने बहुत गंभीर मुद्रा में परस्पर विचार विमर्श किया और कहा–शाहआलम कृतघ्न है इसकी धूर्त नीतिओं के कारण हमारे बहुत से सैनिक रणक्षेत्र में काम आये है। बात सच्ची थी परन्तु समरू बेगम ने क्षमा याचना की गुहार लगाई। खालसा पंथ ने

घटना क्रम पर पुन: विचार किया। खालसा पंचायत ने सोचा हम तो दिल्ली में स्थित अपने गुरूजनों के एतिहासिक स्थल प्रगट करके उन स्थानों पर स्मार्क बनाने के विचार कर के घर से निकले थे। उस समय हमारा मुख्य लक्ष्य यही था परन्तु अब परिस्थितियां बदल गई है। परन्तु समरू बेगम अडिग याचक की तरह क्षमा याचना की झोली फैलाकर गुहार लगाती रही। वह टस से मस नहीं हुई आपने अपने कहा – आप में और मराठा सरदारों अथवा अंग्रेज़ों में अंतर ही क्या रह गया वे भी तो दिल्ली पर बलपूर्वक कब्जा करना चाहते थे। नारी आंसु धारा पर खालसा पसीज गया। इस पर बघेल सिंघ ने कहा – हमने 16 बार पहले भी दिल्ली के बाहरीय क्षेत्र को जीता है परन्तु कब्जा नहीं किया हमारी त्याग और बलिदान की भावना रही है हमारा सदैव लक्ष्य दुष्ट दमन ही रहा है। हम तो दिल्ली मारी या बिल्ली मारी एक ही समान जानते है यदि प्रभु ने चाहा तो 17वीं बार पुन: सम्पूर्ण कब्जा दिल्ली पर हमारा ही होगा।

1. **खालसा दल को तीन लाख रूपये हर्ज़ाना के रूप में दिये जायें।**
2. **नगर की कोतवाली तथा चुंगी वसूल करने का अधिकार सरदार बघेल सिंह को सौंप दिया जायेगा।**
3. **जब तक गुरूद्वारों का निर्माण सम्पूर्ण न हो जाये, तब तक सरदार बघेल सिंह चार हजार सैनिक अपने साथ रख सकेंगे ।**

जिस समय दल खालसा के तीस हजार सैनिक दिल्ली में अपना विशाल शिविर बनाकर समय की प्रतीक्षा कर रहे थे। यही शिविर स्थल (दल खालसे की छावनी) बाद में तीस हजारी कोर्ट के नाम से विख्यात हुई । आजकल यहाँ तीस हजारी मैट्रो रेलवे स्टेशन है ।

सरदार बघेल सिंह जी के लिए सबसे कठिन कार्य उस स्थान को खोजना था, जहाँ श्री गुरू तेग बहादुर साहिब जी को शहीद किया गया था । आपने एक वृद्ध स्त्री को खोजा जिसकी आयु उस समय लगभग 117 वर्ष थी । उसने बताया कि जहाँ चाँदनी चौक में मस्जिद है, वही स्थल है,

जहाँ गुरूदेव विराजमान थे और उन पर जल्लाद ने तलवार चलाई थी। उसने बताया कि मैं उन दिनों 9 वर्ष की थी और अपने पिता के साथ आई थी। मेरे पिता ने वह स्थल अपनी मश्क से पानी डालकर धोया था । यह मस्जिद उन दिनों नहीं हुआ करती थी । इसका निर्माण बाद में किया गया, इससे पहले वहां बड़ का वृक्ष था ।

सरदार बघेल सिंह जी को गुरूद्वारा निर्माण कार्य में बहुत संघर्ष करना पड़ा, कहीं बल प्रयोग भी किया गया परन्तु वह अपनी धुन के पक्के थे । अत: वह अपने लक्ष्य में सफल हो गये । उन्होंने माता सुन्दर कौर, बंगला साहिब, रकाब गंज, शीश गंज, नानक प्याऊ, मंजनू टीला, मोती बाग, बाला साहिब इत्यादि ऐतिहासिक गुरूद्वारों का निर्माण करवाया ।

नोट: – सन् 1857 ईस्वी के गदर के पश्चात् राजा सरूप सिंह (जींद रियासत) ने कड़े परिश्रम के बाद विलायत से स्वीकृति लेकर गुरूद्वारा शीश गंज का आधुनिक ढँग से निर्माण करवाया ।

पँजाब लौटते समय बघेल सिंह जी ने अपना एक वकील (लखपतराय) दिल्ली दरबार में अपने प्रतिनिधि के रूप में छोड़ दिया ।

इस वर्ष पुन: सरदार बघेल सिंह, सरदार भाग सिंह, सरदार भंगा सिंह, सरदार गुरदित सिंह आदि मिलकर यमुना पार कर गये और जाबिता खान को नज़राना न भेजने के लिए ललकारा । उससे पिछला हिसाब चुकता करके अनूप शहर के अमीरों से नज़राने वसूले । इस पर गँगा नदी के उस पार के अवधी नवाब को अपनी सत्ता डगमगाती हुई दिखाई दी । उसने तुरन्त अँग्रेजों से सहायता माँगी और नदी तट पर मोर्चा बांध कर गोलाबारी करने लगे । समय की नज़ाकत को मद्देनजर रखते हुए सिक्खों ने गँगा पार करने की योजना स्थगित कर दी । फिर दल खालसा ने अपने अपने खर्चे पूरे करने के लिए अलीगढ खुरजा, हाथरस तथा इटावा के नवाबों व अमीरों से नज़राने वसूल किये किन्तु इटावा के नवाब ईसा खान ने मुकाबला किया किन्तु पराजित होकर भाग गया । तद्पश्चात् सिक्ख विजय के डंके बजाते हुए बुलंद शहर से नज़राने वसूलते हुए पँजाब लौट गये ।

बादशाह शाह आलम के प्रधानमंत्री नजीबुद्दौला की मृत्यु सन् 1770 ईस्वी में हुई । उसका पुत्र जबता खान को मीर बख्शी पद तथा 'अमीर उल उमरा' की उपाधि से सम्मानित कर दिया गया परन्तु दरबारियों की आपसी अनबन के कारण जाबिता खान को जल्दी ही सब कुछ खो देना पड़ा, विवशता में उसने सिक्खों से सहायता मांगी ।

छाय जाती एकता अनेकता विलाय जाती, होती कुचीलता कतेबन कुरान की।।
पाप प्रपक्क जाते धर्म धस्सक जाते, वर्ण गरक जाते साहित्य विधान की ।।
देवी देव देहुरे सन्तोख सिंघ दूर होते, रीत मिट जाती कथा वेदन पुरान की ।।

कविः – सन्तोख सिंघ चुड़ाहमणी

ना कहूं अबकी, ना कहूं जब की, बात कहूं मैं तब की।।
अगर न होते गुरू गोबिंद सिंघ सुनंत होती सब की।।

कविः – बाबा बुल्ले शाह

प्रार्थना

हे! निराकार – दिव्य जोति, हमें शाशवत ज्ञान प्रदान कीजिए ।।
हम सभी तेरी अंश है, शुभ कर्मो का वरदान दीजिए ।।
मानव – मानव से घृणा न करे, ऐसा चरित्र निर्माण हो हमारा ।।
कर्म काण्डों और पाखण्ड की रूढ़ीवादी विचारधारा से मिले छुटकारा।।
जाति – पाति, वर्ण आश्रम के भेद भाव मिट जाए कोई ऐसी दो युक्ति ।।
काल्पनिक देवी – देवताओं और निर्जीव मूर्ति पूजा से हमें दिलवाओं मुक्ति।।
धर्मो के आडम्बरों से हमारा मोह भंग हो, एक जोति का करें ध्यान।।
सभी मिल जुलकर रहे, ऐसी विवेक बुद्धि तथा दीजिए ब्रह्म ज्ञान ।।
शब्द गुरू का उपदेश सत्य संगत से ग्रहण करें, जीवन क्रांति मय कीजिए।।
हे! पतित पावन – सचिनन्द, हे! कृपा सिंधु कल्याणकारी हमारी विनती सुन लीजिए।

दिल्ली का लाल किला त्यागते हुए जत्थेदार सरदार बघेल सिंघ तथा उन के अन्य जत्थेदार साथी

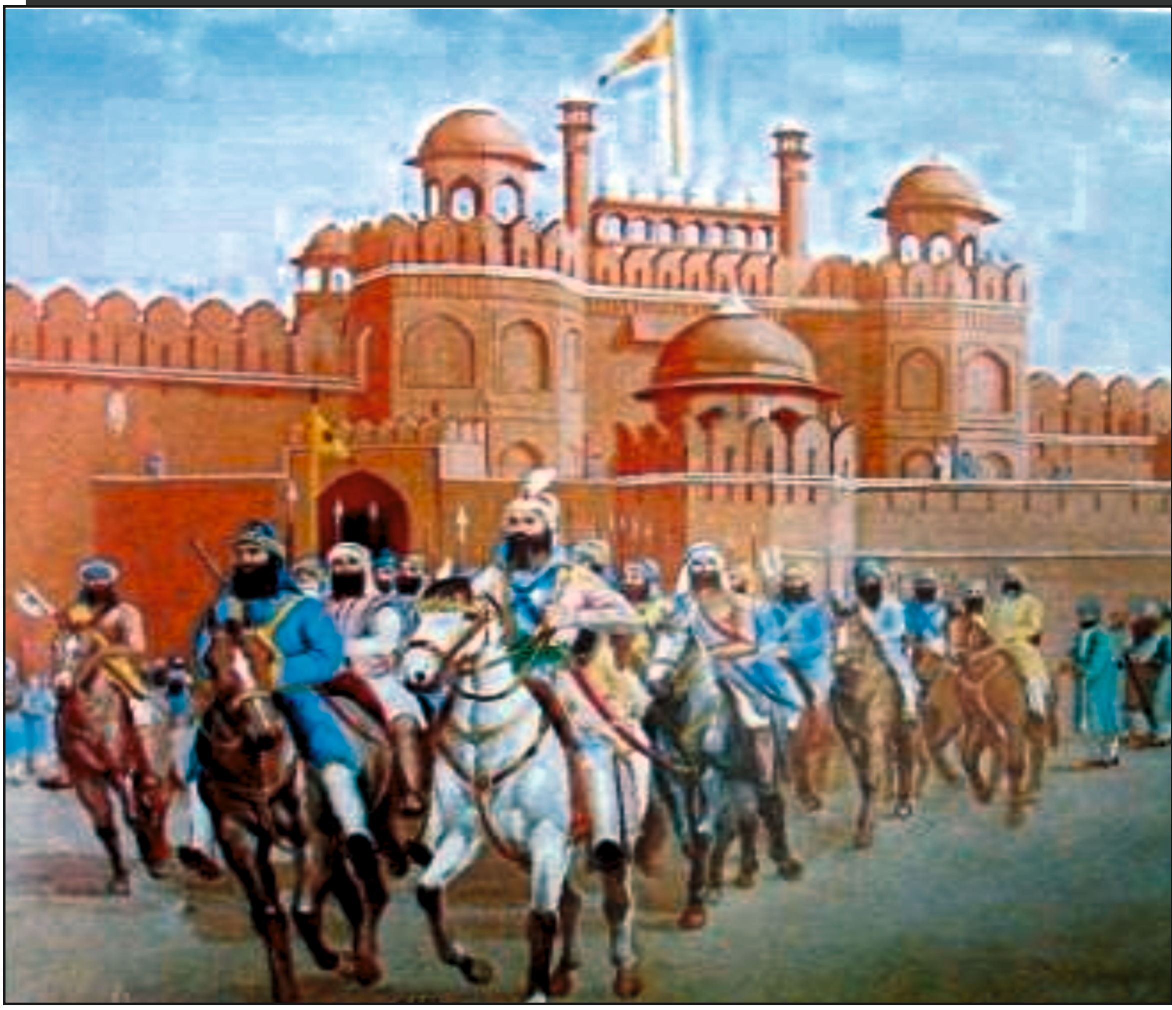

1. सन् 1783 ई० जनवरी में जत्थेदार बघेल सिंघ तथा अन्य मिस्लदारों की दिल्ली सीमा पर दिल्ली प्रवेश करने के लिए एकत्रता वाले स्थल को सिंघू बार्ड कहा जाता है।

2. समस्त मिस्लदारों के घोड़सवारों की कुल संख्या तीस हज़ार (30000) थी। उन्होंने जहां अपनी छावनी बनाई उस स्थान को तीस हज़ारी कोर्ट के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त है। जिस का सेरा खालसा पंथ के नाम है।

3. अजमेरी दरवाजे की दीवार में तौप के गोले से मौरी करके खालसा सेना दिल्ली में प्रवेश कर गई। उस गेट को वर्तमान मौरी गेट कहा जाता है। यह भी खालसा पंथ की उपलब्धि है।

4. दिल्ली विजय की खुशी में सिक्खों ने कई दिनों तक मिट्ठाईयां बांटी उस स्थान को मिट्ठाई वाला बाजार कहा जाता है। यह भी उसी समय की एक यादगार है।

नोटः – दिल्ली में खालसा पंथ की अमिट तथा स्थाई यादगारे रहती दुनियां तक बनी रहेगी।

website : www.sikhworld.info

इस वैब साईट की विशेषता

गुरुमत के प्रिय पाठकजनों। आपके चरणों में विनम्र विनती है कि आप को किसी भी **Library** में जाने की आवश्यकता नहीं है, अब आपके पास इस आधुनिक युग में एक विशेष **Website** उपलब्ध हैं जिसका नाम है **www.sikhworld.info** यह **Website** मूल रूप में सिक्ख इतिहास की है इस में सभी पुस्तकें बहुत विस्तृत रूप में तथा रोचकशैली में दो भाषाओं हिन्दी, तथा पंजाबी में उपलब्ध है। इस के प्रथम भाग में श्री गुरू नानक देव जी से लेकर श्री गुरू गोबिंद सिंघ तक फिर दूसरे भाग में बन्दा बहादुर से लेकर स्वतंत्रता तक सिक्ख इतिहास है। ये पुस्तकें **Period-wise & Serial-wise** उपल्बध है। इसके अतिरिक्त गुरूवाणी अंताक्षरी, गुरूपर्व बुकलेट इत्यादि अनेकों गुरुमत सामग्री क्रमवार पड़ी हैं। ये सभी पुस्तकें **Down Load Free** हैं। अब मैं जो आप को महत्त्व पूर्ण बात बताने जा रहा हूँ वह यह है कि इस **Website** के **Main Links** में एक फौजी नावल (**उपन्यास**) मित्र मण्डली है जिस में सभी भारतीय सैनिक दक्षिण तथा उत्तर भारत के हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई इत्यादि इक्ट्ठे बैरकों में मिल-जुल कर रहते हैं जो कि अवकाश के समय आपस में चुटकुले-शायरों-शायरी अथवा भांगड़ा नृत्य इत्यादि करते हैं उनकी जीवनशैली **Life-Style** पढ़ने योग्य है उनकी एक फौजी भाभी जी है जो उनका समय-समय पर मार्ग दर्शन करती है अत: यह नावल पढ़ने योग्य है, यह जहां मनोंरजन करती है वही ज्ञान वर्धक तथा परस्पर प्यार ही प्यार बांटती है।

नोटः कृप्या आप अपने मोबाईल में इस Sticker का फोटो ले ले और अपने मित्रगणों को WhatsApp कर दें। –धन्यवाद